उत्पत्ति २:
सातवां दिन

- **शब्बत**
- **अलग किया गया, सातवें दिन को बाकी सभी दिनों से अलग बनाया गया।**
- **शब्बत** का अर्थ विश्राम नहीं है, इसका अर्थ है रुकना, बंद करना, विराम देना।
- पुराने नियम के कई शब्दों का अनुवाद विश्राम के रूप में किया गया है:
- नाह-खाम = **सांत्वना देना, सांत्वना देना**
- शामत = नीचे फेंक देना।
- शान = **टेक लगाकर खड़े होना**

पवित्रता क्या है, ये परमेश्वर घोषणा करता है।

- सातवां दिन (**शब्बत**) पवित्र है।
- **परमेश्वर** ने सातवें दिन को "क़दाश" किया (पवित्र किया)
- **शब्बत** = शबात

- *शब्बत सबसे पहले इज़राइल को नहीं दिया गया था।*

- उत्पत्ति २:२,३ में मानवजाति को शब्बत का उल्लेख किया गया है।

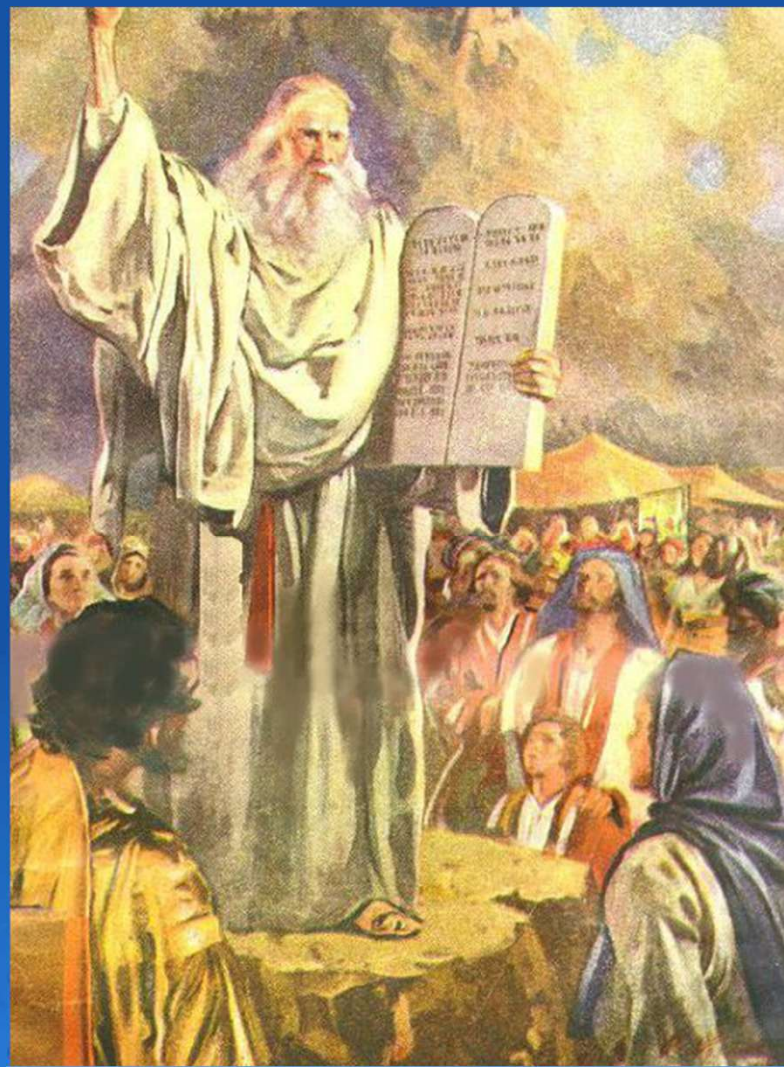

निरंतरता : मार्च ७, ३२१ ईस्वी के, आदेश :

"सभी न्यायाधीशों, नगरवासियों और सभी व्यवसायों को सूर्य के सूर्य का आदरणीय दिन पर विश्राम करने दें।"

लाओडिसिया की परिषद
३६४ ईस्वी
कैनन २९

ईसाइयों को सब्त के दिन विश्राम करके यहूदी धर्म का पालन नहीं करना चाहिए, लेकिन उस दिन काम करना होगा, बल्कि प्रभु के दिन का सम्मान करना; और, यदि संभव हो तो ईसाई के रूप में विश्राम करना। लेकिन यदि कोई यहूदी धर्म का पालन करने वाला पाया जाए, तो उसे मसीह की ओर से बहिष्कृत कर दिया जाए।

मिथ्रास, सूर्य देवता

रविवार को "सूर्य के पूजनीय दिन" के रूप में मनाया जाता है।

- महाप्रलय के बाद, मनुष्य फिर से दुष्ट हो गया।
- परमेश्वर ने अपने पवित्र किए हुए लोगों, इज़राइल के माध्यम से **शब्बत** को पुनः स्थापित किया।
- परमेश्वर ने घोषणा की कि जो उन पर भरोसा करते हैं उनके **शब्बत** का पालन करना उन लोगों की निशानी है।

पूर्व दिशा का बाइबिल में विशेष महत्व है।

अदन की भूमि

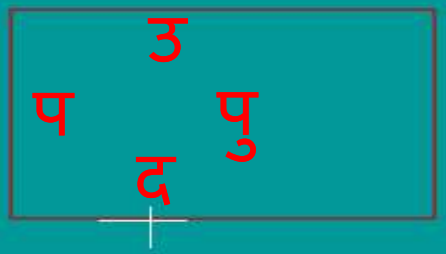

बगीचा

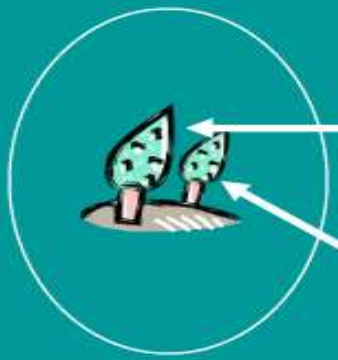

अच्छे और बुरे ज्ञान का वृक्ष

जीवन का वृक्ष

आदम को बगीचे के बाहर निर्माण किया गया।

- आदम को इब्रानी भाषा में आदमी कहते हैं।
- दम = लहू
- अदामाह = पृथ्वी, मिट्टी
- अदोम = लाल, सुर्ख
- बाइबल में लाल रंग का विशेष महत्व है।
- लाल बछिया, आदम, लाल रंग और ईसा मसीह के लहू के बीच संबंध है।

अदन का बगीचा
स्वर्ग का
भौतिक प्रतिरूप था।

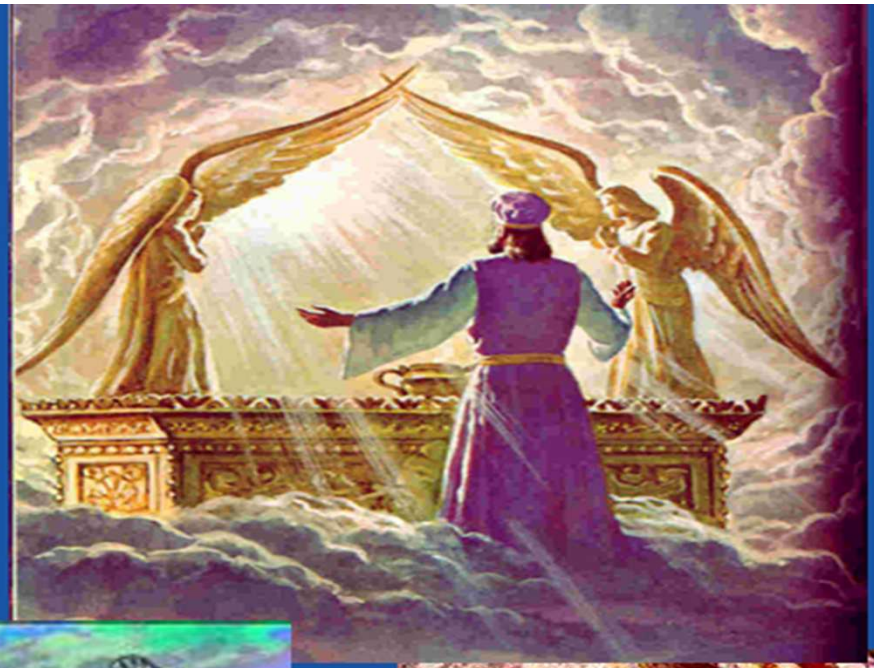

जंगल में
बना तंबू,
अदन के बगीचे
का एक आदर्श
रूप है।

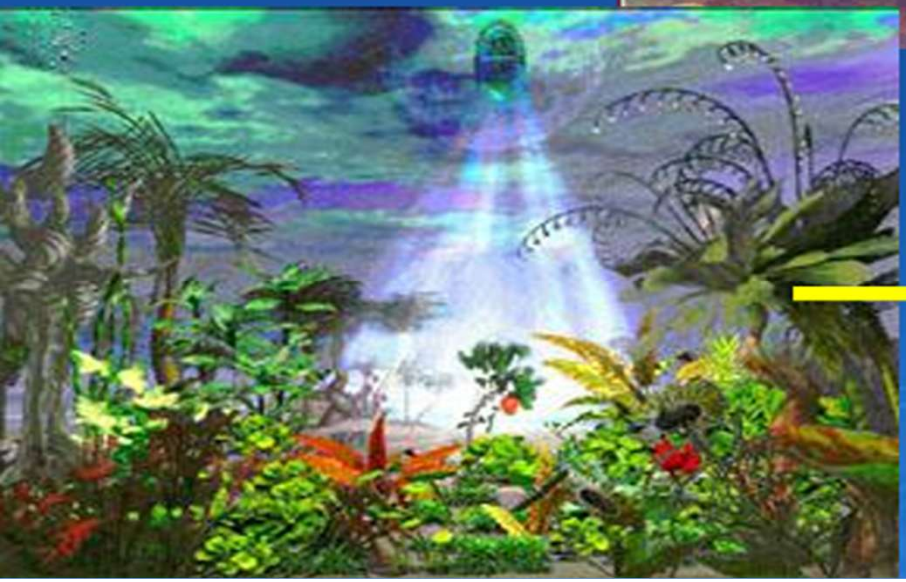

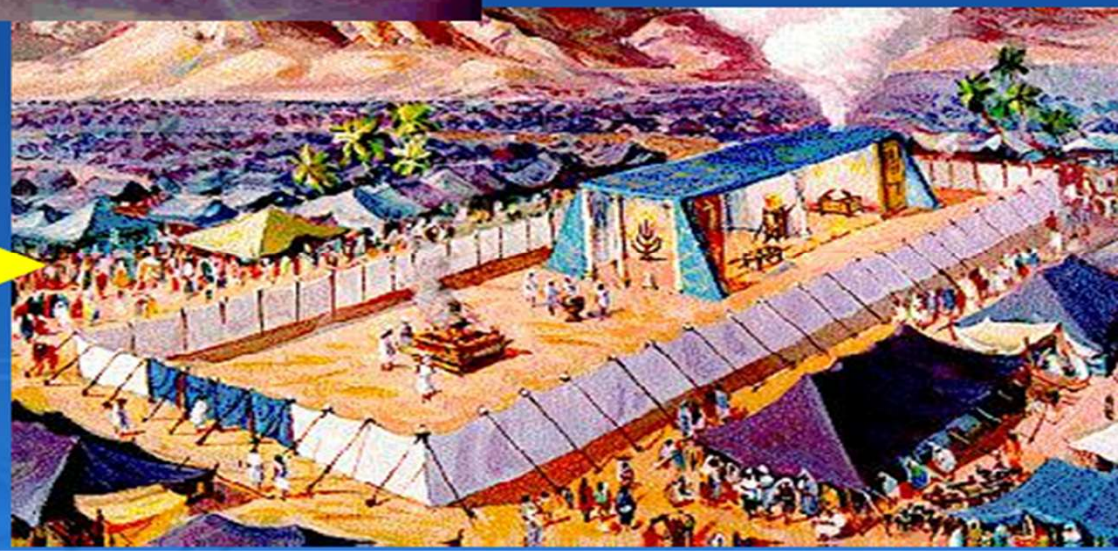

जीवन

- ७ पद. ईश्वर ने आदम में 'जीवन' *(चय्यिम)* डाला।
- ईश्वर ने आदम में जीवन 'फूँका' *(नफच)*
- इब्रानियों मूल शब्दों की भाषा है।
- ईश्वर ने आदम में 'प्राण' *(नशेमह)* फूँका।
- आदम एक 'जीवित प्राणी' *(चाय नेफेश)* बन गया
- यह विचार है कि सांस लेना, श्वास लेना एक अलौकिक स्रोत से होता है... एक गैर-भौतिक स्रोत से।
- जीवन परमेश्वर में है...जीवन केवल परमेश्वर से ही आता है।
- जीवन परमेश्वर का एक गुण है।

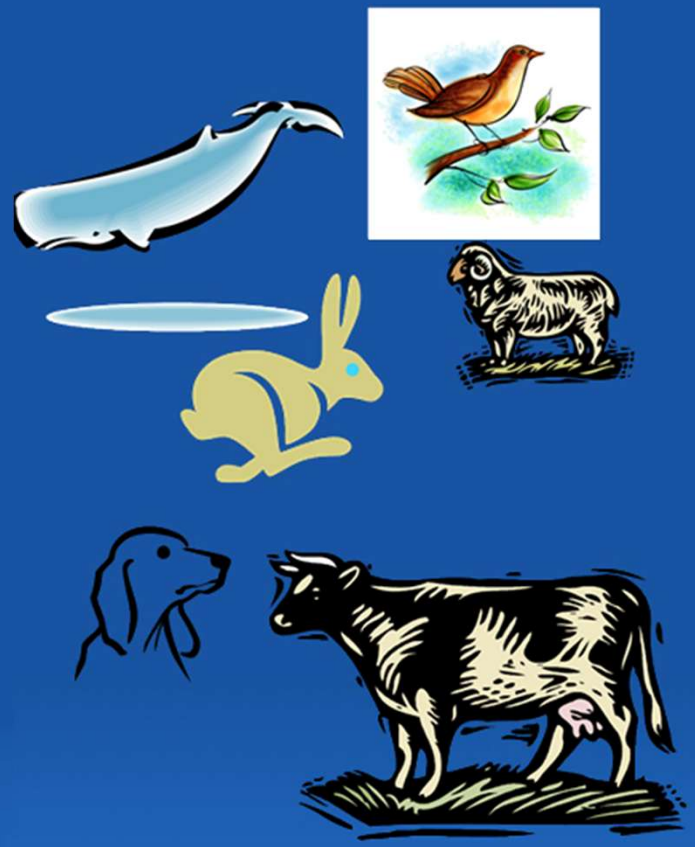

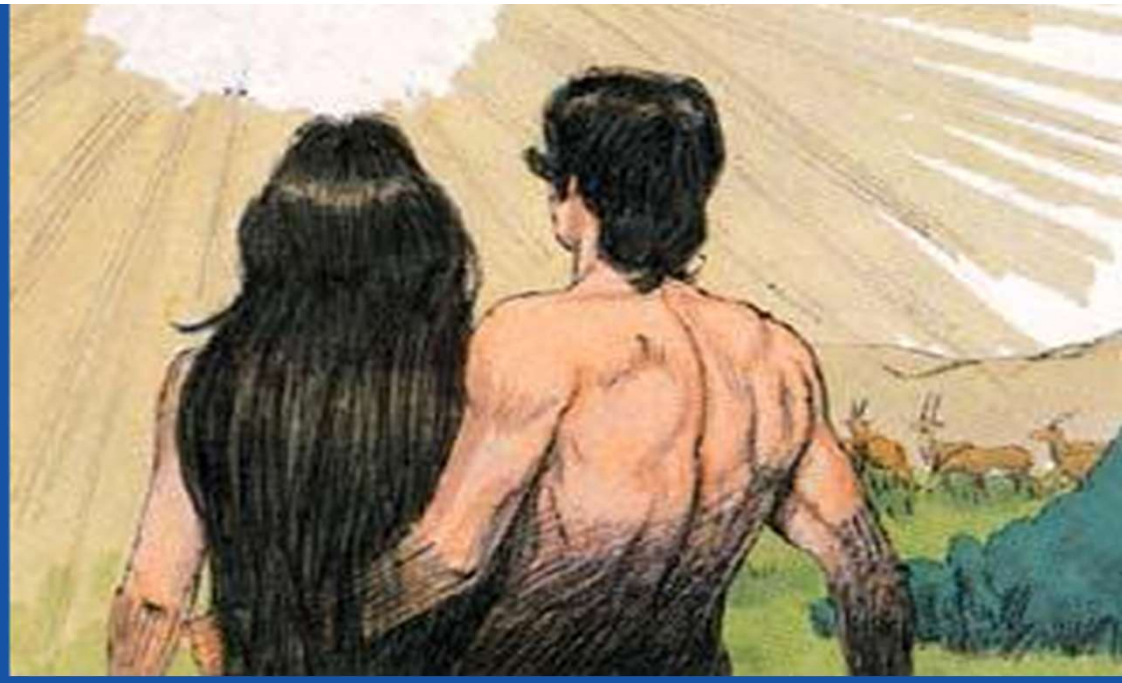

सभी जीवित प्राणियों के जीवन का स्रोत हमारे ब्रह्मांड के बाहर से आता है।

जीवन केवल मनुष्यों तक ही सीमित नहीं है।

परमेश्वर अपने सभी जीवित प्राणियों में जीवन डालता है।

आत्मा = नेफेश

- जीवित प्राणी = छाय नेफेश
- जीवन शक्ति जैविक पदार्थों का परिणाम नहीं है, यह परमेश्वर से प्राप्त होती है।
- नशेमह चय्यिम = जीवन की सांस
- चय्यिम बहुवचन है (शाब्दिक अर्थ में एक से ज्यादा ज़िंदगियाँ, न कि जीवन) ।
- एलोहीम बहुवचन है।
- क्या आत्मा और प्राण एक ही चीज हैं?
- चय्यिम से संकेत मिलता है कि परमेश्वर ने मनुष्यों में एक से अधिक प्रकार के जीवन की क्षमता प्रदान की है।

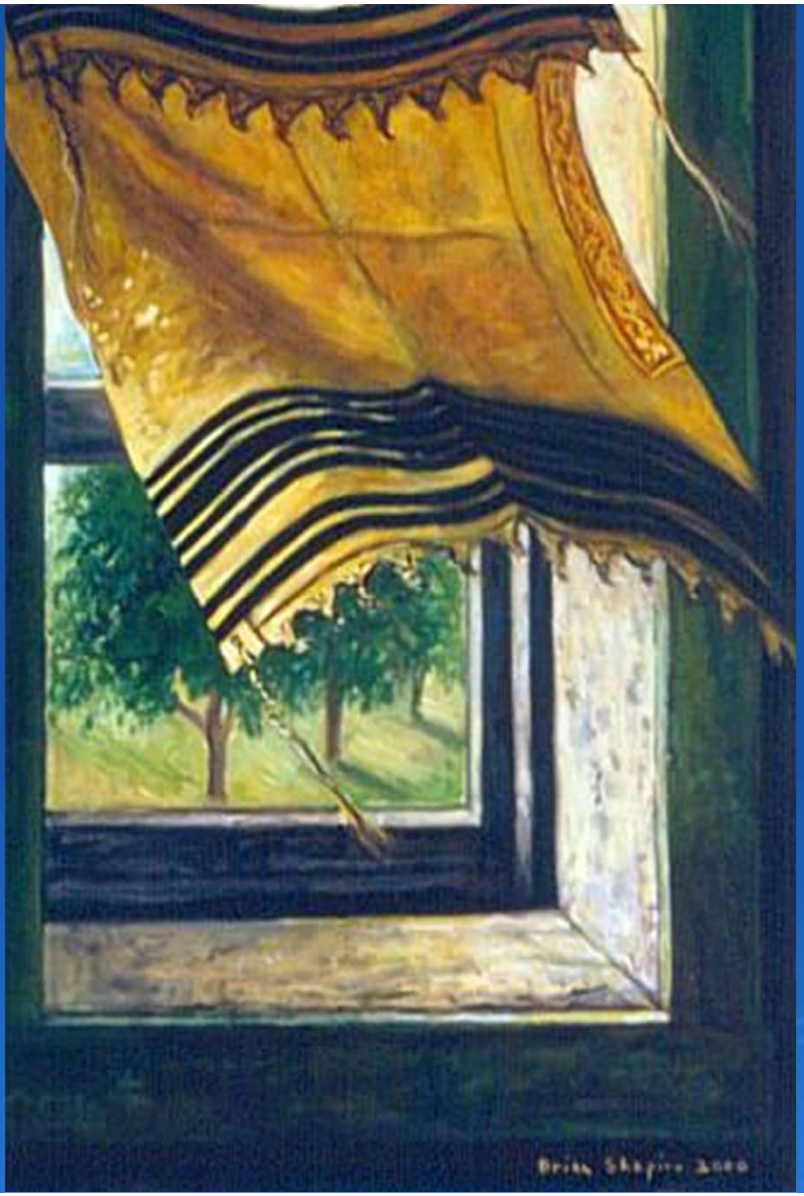

रुयाक हकोदेश : पवित्र आत्मा

- ***रुयाक*** = साँस, हवा ।
- पवित्र वायु , पवित्र साँस ।
- यह एक विशेष और अद्वितीय सार को संदर्भित करता है जो ईश्वर के लोगों को जोड़ता है।
- आत्मा = *नेफेश* जान, बुनियादी जीवन प्रदान करता है ।
- आत्मा = *रुयाक* मनुष्य को परमेस्वर को जानने का मार्ग प्रदान करता है।
- केवल मनुष्य के पास रुयाक है ।

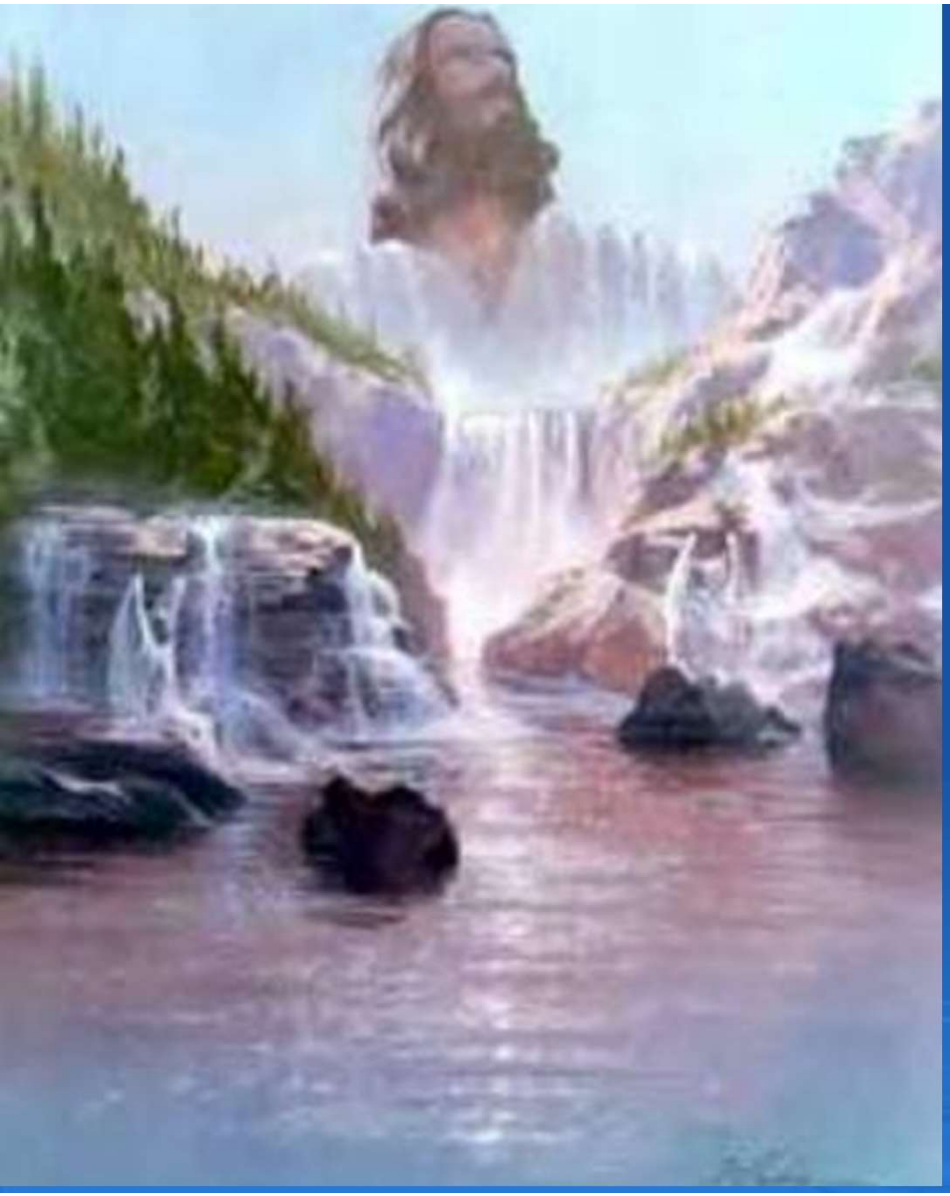

रुयाक हकोदेश : पवित्र आत्मा

- जीवन का जल = *मयिम चाय्यिम*
- जीवन की सांस = *नशेमह चाय्यिम*
- यीशुआ जीवित जल है
- जीवनदायी जल वह जल था जिसका उपयोग अनुष्ठानिक शुद्धिकरण के लिए किया जाता था।
- भौतिक दृष्टि से, बहता हुआ पानी नदी या झरने के पानी जैसा होता था।

- १) परमेश्वर ने मनुष्य की रचना करने से पहले पौधों की रचना नहीं की। पौधों की रचना मनुष्य के लिए की गई थी।

- २) बारिश नहीं हुई थी। जमीन से पानी (धुंध) ऊपर आया, न कि आकाश से पानी (बारिश) नीचे आया।

- ३) धरती की सतह के नीचे से दबाव के कारण पानी के बुलबुले बनकर ऊपर आने और फिर धाराओं और नदियों का निर्माण करने से जमीन नम बनी रहती थी।

- ४)बगीचे का पानी "कुश की भूमि" को जाता था। बाइबल के अनुसार, कुश की भूमि मिस्र और इथियोपिया है। (लेकिन यह मेसोपोटामिया में भी हो सकती है)

परमेश्वर आदम को एक साथी देता है।

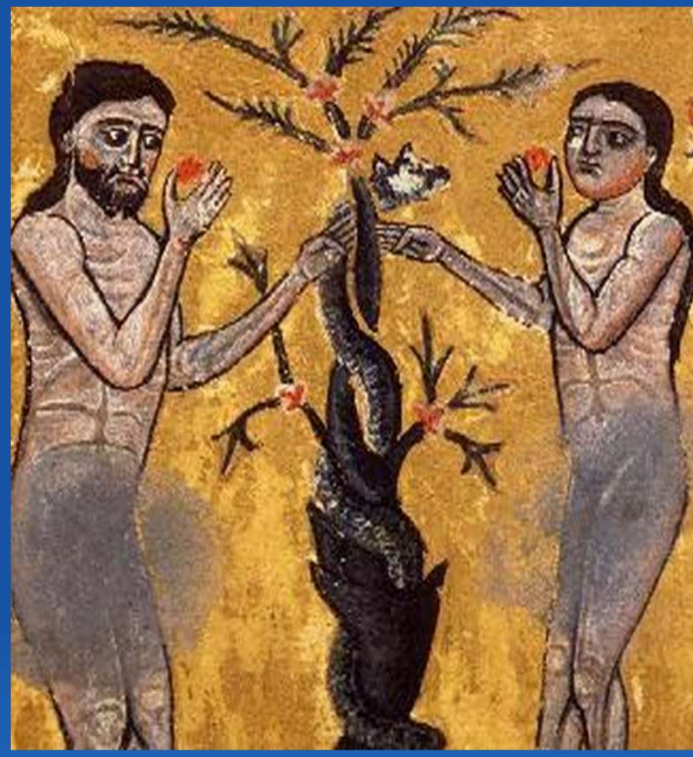

- पुरुष, आदमी = ***ईश***
- महिला, औरत, पत्नी = *ईश'आह*
- *ईश* = पुरुष *आह* = से बाहर
- औरत, पत्नी = पुरुष से बाहर
  पद २४, विवाह की अवधारणा का परिचय दिया गया है।
- पत्नी का स्त्री होना आवश्यक है क्योंकि वह "ईश'आह"... पुरुष से बाहर।
- परमेश्वर की दृष्टि में पति-पत्नी जैविक और आध्यात्मिक रूप से परस्पर जुड़े हुए हैं।

उत्पत्ति २:२३-२४ और उन्होंने कहा: अंततः यह मेरी हड्डियों की हड्डी और मेरे मांस का मांस है! इसे स्त्री कहा जाना चाहिए, क्योंकि इसे पुरुष से लिया गया था। २४ इसीलिए पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से जुड़ जाता है और वे एक शरीर बन जाते हैं।